International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-7, Issue-5 November – 2020
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

विद्रोह विहिन नारीयों के अमर गायक –रेणू

डॉक्टर सारिका धोंडिराम शेप

सार

यह अध्ययन विद्रोह विहिन नारीयों के अमर गायक रेणू जी पर किया गया है जिसमे उनके कृतित्व और ग्रामीण नारी का सचित्र अध्ययन किया है उनके उपन्यास ,कहानियो में नारी का चित्रण देखने को मिलता है साथ ही आज वर्त्तमान सवरूप को देखते हुए नारी की गहनता को समझा जा सकता है ।

मुख्य शब्द : *नारी, फणीश्वरनाथ 'रेणु'.*

प्रस्तावना

सृष्टि का आधार,प्रकृति की पुत्री–नारी जो आकर्षक,स्नेहयुक्त, उल्लासदायिनी है, अनंतकाल से ही साहित्यकारों की लेखनी में चित्रित होती रही है।आँचलिक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' के साहित्य में उनकी ही तूलिका से चित्रांकित साहित्य फलक में अवतरित मुख्य नारी पात्रों का सन्दर्भ प्रस्तुत कर रही हूँ। नारी का जीवन सदैव जाटिलताओं से घिरा रहा है। साहित्य में अनुभव के क्षेत्र आते हैं,अनुभव के क्षेत्र समय और देशकाल के आधार पर परिवर्तित भी होते रहते हैं। लेखक ने अपने पात्रों द्वारा साहित्य के क्षेत्र में जीवन के वास्तविक संघर्ष को व्यक्त कर समाज की तत्कालीन वास्तविकता को दिखाया है।

लेखक ने नारी चरित्र के माध्यम से आधुनिक युग की समस्याओं को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। यह समाज और पुरुष नारी के बिना अपूर्ण है,तो साहित्य भी नारी चित्रण के बिना पूर्ण नही हो सकता। सभ्यता और संस्कृति का विकास वस्तुतः नारी की स्थिति के विकास से ही प्रतिबिम्बित होता है। मानव के जीवन संघर्ष की दौड़ में,सभ्यता को ओढ़ने,पीड़ा और अवसाद से बाहर निकालने में स्त्री जाति ने सदा ही पुरुषों की विषम परिस्थितियों को परिवर्तित करने का प्रयत्न किया है।

लेखक ने अपने साहित्य में नारी के सन्दर्भों को लेकर देशकाल तथा वैचारिक समस्याओं को उठाया है। समाज में व्याप्त मनोविकारों को लेकर नारी चरित्र में डाल दिया है। नारी की जो समस्याएँ 'रेणु' जी ने तब व्यक्त की थी,आज भी नारी सशक्तीकरण के दौर में जारी हैं।

'मैला आँचल' की प्रमुख स्त्री पात्र 'कमला' है,जो डॉ. प्रशांत के बच्चे की माँ विवाह से पूर्व ही बन जाती है। नवजात शिशु के प्रति उसकी वत्सलता को आँचल मैला करने जैसी कोई अनुभूति नहीं होती। वह एकनिष्ठ सच्चे प्रेम का उपहार डॉ. प्रशांत को दान करती है,वहीं 'लक्ष्मी' नामक पात्र के माध्यम से फणीश्वर नाथ 'रेणु' जी ने बाल यौन शोषण एवं दासी प्रथा को उपन्यास में चित्रित किया है। 'लक्ष्मी' सेवादास की मृत्यु के पश्चात रामदास के चंगुल में फंस जाती है। वह अनवरत शोषण की शिकार होती रहती है। फणीश्वर जी ने लक्ष्मी के बदले हुए चरित्र को सशक्त वक्ता व सामाजिक कार्यकर्त्ता के रुप में

व्यक्त किया है तो दूसरी ओर उसे आदर्श प्रेमिका और पत्नी के रुप में भी दिखाया है। मठ के एक प्रसंग द्वारा लक्ष्मी में प्रतिशोध की भावना को भी लेखक ने व्यक्त किया है। लेखक ने लक्ष्मी के चरित्र के माध्यम से पुरुष वर्ग की नारी जाति पर संदेहपूर्ण दृष्टि पर लेखनी चलाई है,वहीं श्रेष्ठ सहायक स्त्री पात्र लक्ष्मी द्वारा नारी मन की एक निष्ठता को व्यक्त किया है। ' रेणु' जी ने अल्पावधि के लिए चित्रित पात्र 'ममता' में कर्त्तव्यनिष्ठा,निस्वार्थभाव,मानवीय दृष्टिकोण,मातृभूमि के प्रति कर्त्तव्य को लेकर संतुष्ट और प्रसन्न दिखाई देती है। उपन्यासकार ने ममता को एक आदर्शनारी और त्यागमयी प्रेमिका के रुप में प्रस्तुत किया है। अन्य स्त्री पात्रों में फुलिया,सिलिया और रमपियरिया आती है,जो छोटे प्रसंगों के माध्यम से अपना प्रभाव डालती हैं।

'परती परिकथा' उपन्यास की प्रमुख पात्र 'ताजमनी' मुख्य नायिका के रुप में सामने आती है। लेखक ने संपूर्ण उपन्यास में उसे एक प्रेमिका के रुप मे चित्रित किया है,वहीं गंगा काकी रोक–टोक व आगाह करती नजर आती है।

'मलारी' एक सफल सहायक पात्र के रुप में चित्रित की गई है। वह निचली (चमार)जाति से है। पढ़–लिखकर अर्न्तजातिय विवाह करती है जो आज के परिप्रेक्ष्य में तर्क संगत है। अर्न्तजातिय विवाह लेखक व पात्र दोनों के लिए साहस और अभूतपूर्व सफलता है,क्योंकि जब जातिगत भेवभाव हटेगा,तो शोषण भी हटेगा।

'इरावती' पात्र के माध्यम से लेखक ने भारत विभाजन के समय भोगी गई यातनाओं के परिणाम स्वरूप मानवीयता के प्रति अविश्वास उसके चरित्र को हीन भावना से भर देता है,जो आज के परिप्रेक्ष्य में अवसाद जैसी बीमारी का संकेतक था। नारीगत सौहार्द भावना सदैव ओत–प्रोत दिखाई गई है।

'दीर्घतपा' उपन्यास के प्रमुख पात्र कु. बेला गुप्त ही आती है। उपन्यास का नामकरण बेला की तपोमय भूमिका के अनुरूप ही रखा गया है। फणीश्वर नाथ रेणु जी बेला गुप्त के क्रांतिकारी जीवन को प्रस्तुत करते हैं। इसी तारतम्य में बेलागुप्त व्यभिचारी कुप्रवृत्ति का शिकार होती है। अपने साहस के बल पर वह नए जीवन की शुरुआत करती है और नर्स की ट्रेनिंग लेती है । कुछ वर्षों बाद वह एक क्रांतिकारी रोगी से अपने अस्पताल में प्रेम करती है और उसके साथ भाग जाना चाहती है,किंतु स्थितियां पुनः बदलती हैं। वह वर्किंग वूमेंस बोर्ड की फील्ड आर्गेनाइजर नियुक्त होती है। बाद में वह वीमेंस वेलफेयर बोर्ड की सुपरिन्टेंडेंट की सफल भूमिका निभाती है। वह बदले हुए रुप में आज की सबला नारी की कर्तव्यशीलता,त्याग और निस्वार्थ भाव को व्यक्त करती है।

श्रीमती ज्योत्सना आनन्द ' दीर्घतपा' उपन्यास की खलनायिका पात्र है। वह आज के नारी निकेतन,नारी गृह जैसे संस्थान में वैश्यावृत्ति की शिकार,विलासप्रिय और निम्नकोटि की महिला है। इस चरित्र के प्रति पाठकों के मनो मस्तिष्क में वितृष्णा का भाव जागृत होता है। श्रीमती ज्योत्सना आनन्द का अर्थ और काम दोनो में ही भ्रष्ट चरित्र सामने आया है। यह पात्र अनैतिकता के गर्त में घृणित मारी चरित्र का संकेत देती है।' दीर्घतपा' उपन्यास में श्रीमती रमला बनर्जी ही बेलागुप्त को प्रतिष्ठित कराती हैं। उनका

चरित्र एक तरफ बेला गुप्त का मार्ग दर्शन कराता है तो दूसरी तरफ श्रीमती आनन्द के कार्य व्यवहार में बाधा पहुंचाता है।

लेखक ने रमला बनर्जी के चरित्र के माध्यम से एक आदर्श समाज सेविका के प्रभावशाली और सशक्त चरित्र को प्रस्तुत किया है। दीर्घतपा' में अन्य नारी पात्र विभा–गौरी,कुंती–तारा,अंजू–मंजू,रमा–रेवा तथा छात्रावास की नौकरानी रमरतिया सभी अपनी–अपनी योग्यताओं के साथ एक विशेष छाप छोड़ती हैं।

जुलूस' नामक उपन्यास की प्रमुख पात्र 'पवित्रा' बचपन से ही संघर्षों से जूझकर ही यौवनावस्था को प्राप्त करती है। वह व्यभिचारी वृत्ति के लोगों से अपने आपको बचाते हुए एक लोकप्रिय युवती के रुप में चित्रित की गई है। पवित्रा यथा नाम तथा गुण को चरितार्थ करती है और त्यागमय चरित्र स्थापित करती है।

'पल्टू बाबू रोड' फणीश्वरनाथ रेणु जी का लघु उपन्यास है। इसमें बिजली प्रमुख पात्र है,जो आकर्षक एवं प्रभावी व्यक्तित्व से परिपूर्ण है। सभी जगह बिजली के आदेशों को स्वीकार किया जाता है। उपन्यास में आर्थिक संबंधों में यौन शोषण का चित्रण मिलता है।

रेणु' जी ने जिस नारी उत्पीड़न का चित्रण विभिन्न नारी चरित्रों के माध्यम से किया है,यह सामाजिक स्तर पर व्यक्ति नहीं,बल्कि समाज एक इकाई बन कर करता है। जो समाज नारी को प्यार और सुरक्षा देता है,वही समाज नारी के प्रति असहिष्णु भी हो जाता है। लेखक ने जहाँ कहीं भी नारी समस्या उठाई है,उसके अधिकारों के अशोभनीय तथा अनुचित व्यवहार को सहन करने की विवशता दिखाई है। वह बार–बार विवश होकर भी अपने तन को बचा नहीं पाती,जिसका कारण आर्थिक विवशता ही है। उत्पीड़न का निमित्त कभी समाज बनता है तो कभी सामाजिक परम्परावादी दृष्टिकोण। वह प्यार में स्थायित्व की भावना से जुड़ती है और बार– बार शिकार होती है। पुरुष द्वारा शोषित नारियों की अभिव्यक्ति इनकी रचनाओं में गूंजती रहती हैं। .

वर्तमान व्यवस्थाओं में महिलाओं को जीना है तो संगठित होकर इस व्यवस्था को बदलना होगा। इधर नारी की दशा और दिशा में व्यापक परिवर्तन आया है। आज की नारी अपने प्रति न्याय और उत्पीड़न के खिलाफ जो संघर्ष कर रही है,उसे अपने प्रयत्न में अवश्य सफलता मिलेगी।

फणीश्वरनाथ रेणु व्यक्तित्व और कृतित्व

फणीश्वरनाथ रेणु (जन्म: 4 मार्च, 1921 – मृत्यु: 11 अप्रैल, 1977) एक सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार थे। हिन्दी कथा साहित्य के महत्त्वपूर्ण रचनाकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के पूर्णिया ज़िला के श्औराही हिंगनाश गांव में हुआ था। रेणु के पिता शिलानाथ मंडल संपन्न व्यक्ति थे। भारत के स्वाधीनता संघर्ष में उन्होंने भाग लिया था। रेणु के पिता कांग्रेसी थे। रेणु का बचपन आज़ादी की लड़ाई को देखते समझते बीता। रेणु ने स्वंय लिखा है – पिताजी किसान थे और इलाके के स्वराज–आंदोलन के प्रमुख कार्यकर्ता। खादी पहनते थे, घर में चरखा चलता था। स्वाधीनता संघर्ष की चेतना रेणु में उनके पारिवारिक वातावरण से आयी थी। रेणु भी बचपन और किशोरावस्था में ही देश

की आज़ादी की लड़ाई से जुड़ गए थे। 1930–31 ई. में जब रेणु 'अररिया हाईस्कूल' के चौथे दर्जे में पढ़ते थे तभी महात्मा गाँधी की गिरफ्तारी के बाद अररिया में हड़ताल हुई, स्कूल के सारे छात्र भी हड़ताल पर रहे। रेणु ने अपने स्कूल के असिस्टेंट हेडमास्टर को स्कूल में जाने से रोका। रेणु को इसकी सज़ा मिली लेकिन इसके साथ ही वे इलाके के बहादुर सुराजी के रूप में प्रसिद्ध हो गए।

फणीश्वरनाथ रेणु ने 1936 के आसपास से कहानी लेखन की शुरुआत की थी। उस समय कुछ कहानियाँ प्रकाशित भी हुई थीं, किंतु वे किशोर रेणु की अपरिपक्व कहानियाँ थी। 1942 के आंदोलन में गिरफ़्तार होने के बाद जब वे 1944 में जेल से मुक्त हुए, तब घर लौटने पर उन्होंने 'बटबाबा' नामक पहली परिपक्व कहानी लिखी। 'बटबाबा' श्साप्ताहिक विश्वमित्र' के 27 अगस्त 1944 के अंक में प्रकाशित हुई। रेणु की दूसरी कहानी श्पहलवान की ढोलकश 11 दिसम्बर 1944 को 'साप्ताहिक विश्वमित्र' में छपी। 1972 में रेणु ने अपनी अंतिम कहानी श्भित्तिचित्र की मयूरीश लिखी। उनकी अब तक उपलब्ध कहानियों की संख्या 63 है। श्रेणुश को जितनी प्रसिद्धि उपन्यासों से मिली, उतनी ही प्रसिद्धि उनको उनकी कहानियों से भी मिली। ठुमरी, अगिनखोर, आदिम रात्रि की महक,एक श्रावणी दोपहरी की धूप, अच्छे आदमी, सम्पूर्ण कहानियां, आदि उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं।

फ़िल्म 'तीसरी क़सम'

उनकी कहानी **मारे गए गुलफ़ाम** पर आधारित फ़िल्म **तीसरी क़सम** ने भी उन्हें काफ़ी प्रसिद्धि दिलवाई। इस फ़िल्म में राजकपूर और वहीदा रहमान ने मुख्य भूमिका में अभिनय किया था। **तीसरी क़सम** को बासु भट्टाचार्य ने निर्देशित किया था और इसके निर्माता सुप्रसिद्ध गीतकार शैलेन्द्र थे। यह फ़िल्म हिंदी सिनेमा में मील का पत्थर मानी जाती है। कथा–साहित्य के अलावा उन्होंने संस्मरण, रेखाचित्र और रिपोर्ताज आदि विधाओं में भी लिखा। उनके कुछ संस्मरण भी काफ़ी मशहूर हुए। ऋणजल धनजल, वन–तुलसी की गंधश, श्रुत अश्रुत पूर्व, समय की शिला पर, आत्म परिचय उनके संस्मरण हैं। इसके अतिरिक्त वे दिनमान पत्रिका में रिपोर्ताज भी लिखते थे। श्नेपाली क्रांति कथाश उनके रिपोर्ताज का उत्तम उदाहरण है।

आंचलिक कथा

उन्होंने हिन्दी में आंचलिक कथा की नींव रखी। सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय, एक समकालीन कवि, उनके परम मित्र थे। इनकी कई रचनाओं में कटिहार के रेलवे स्टेशन का उल्लेख मिलता है।

लेखन शैली

इनकी लेखन शैली वर्णनात्मक थी जिसमें पात्र के प्रत्येक मनोवैज्ञानिक सोच का विवरण लुभावने तरीके से किया होता था। पात्रों का चरित्र–निर्माण काफ़ी तेज़ीसे होता था क्योंकि पात्र एक सामान्य–सरल मानव मन (प्रायः) के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता था। इनकी लगभग हर कहानी में पात्रों की सोच घटनाओं से प्रधान होती थी। श्एक आदिम रात्रि की महकश इसका एक सुंदर उदाहरण है। इनकी

लेखन–शैली प्रेमचंद से काफ़ी मिलती थी और इन्हें आज़ादी के बाद का प्रेमचंद की संज्ञा भी दी जाती है। अपनी कृतियों में उन्होंने आंचलिक पदों का बहुत प्रयोग किया है।

रेणु जी का **'मैला आंचल'** वस्तु और शिल्प दोनों स्तरों पर सबसे अलग है। इसमें एक नए शिल्प में ग्रामीण–जीवन को चित्रित किया गया है। इसकी विशेषता है कि इसका नायक कोई व्यक्ति (पुरुष या महिला) नहीं वरन् पूरा का पूरा अंचल ही इसका नायक है। मिथिलांचल की पृष्ठभूमि पर रचे इस उपन्यास में उस अंचल की भाषा विशेष का अधिक से अधिक प्रयोग किया गया है। यह प्रयोग इतना सार्थक है कि वह वहां के लोगों की इच्छा–आकांक्षा, रीति–रिवाज़, पर्व–त्यौहार, सोच–विचार, को पूरी प्रामाणिकता के साथ पाठक के सामने उपस्थित करता है। इसकी भूमिका, 9 अगस्त 1954, को लिखते हुए फणीश्वरनाथ श्रेणुश कहते हैं, श्यह है मैला आंचल, एक आंचलिक उपन्यास। इस उपन्यास के केन्द्र में है बिहार का पूर्णिया ज़िला, जो काफ़ी पिछड़ा है। रेणु कहते हैं, इसमें फूल भी है, शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चंदन भी, सुंदरता भी है, कुरूपता भी दृ मैं किसी से दामन बचाकर नहीं निकल पाया।

भाषा चित्रण

उन्होंने अंचल विशेष की भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग किया ताकि उस जन समुदाय को ज़्यादा से ज़्यादा प्रमाणिकता से चित्रित किया जा सके। श्रेणुश ने अपनी अनेक रचनाओं में आंचलिक परिवेश के सौंदर्य, उसकी सजीवता और मानवीय संवेदनाओं को अद्वितीय ढंग से वर्णित किया है। दृश्यों को चित्रित करने के लिए उन्होंने गीत, लय–ताल, वाद्य, ढोल, खंजड़ी नृत्य, लोकनाटक जैसे उपकरणों का सुंदर प्रयोग किया है। श्रेणुश ने मिथक, लोकविश्वास, अंधविश्वास, किंवदंतियां, लोकगीत– इन सभी को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। उन्होंने श्मैला आंचलश उपन्यास में अपने अंचल का इतना गहरा व व्यापक चित्र खींचा है कि सचमुच यह उपन्यास हिन्दी में आंचलिक औपन्यासिक परंपरा की सर्वश्रेष्ठ कृ ति बन गया है। उनका साहित्य हिंदी जाति के सौंदर्य बोध को समृद्ध करने के साथ–साथ अमानवीयता, पराधीनता और साम्राज्यवाद का प्रतिवाद भी करता है। व्यक्ति और कृतिकार दोनों ही रूपों में श्रेणुश अप्रतिम थे।

उद्देश्य

1. रेणु जी की रचनाओं में नारीयों पर अध्ययन करना।
2. रेणु जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अध्ययन करना।

क्रियाविधि

यह शोध अध्ययन फणीश्वरनाथ रेणु की रचनाओं में नारीयों की स्थियो का अध्ययन किया गया हैतथा ग्रमीण नारियो का वर्णन आधिक्य किया है द्वितीयक शोध पाठ्य पुस्तको से संग्रहित किया गया है

डाटा विशलेषण

हमारे समाज में नारी व्यथा की स्थिति यद्यपि अत्यन्त प्राचीन है परन्तु ऐसा लगता है कि यह व्यथा प्राचीन होते हुए भी नई है। स्वतंत्रता के पश्चात् अनेक क्रान्तिकारी सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन देश में हुए और उच्च वर्ग की नारी आगे बढ़ी है, परन्तु सामान्य नारी आज भी दलित, पीडित, शोषित और उपेक्षित है, जो जीवन भर संघर्ष करती है। इसके जन्म पर शिक्षित माता–पिता भी प्रसन्न नहीं होते यहां तक कि जन्म लेने से पहले ही मारने का प्रयत्न शुरू हो जाता है। युवा होने पर विवाह की समस्या इतने गम्भीर रूप में उभर कर सामने आती है कि माता–पिता के लिए समाज के अनेक सरकारी नियम भी विवश नजर आते हैं।

स्वतंत्र भारत में नर–नारी सम्बन्धों के साथ–साथ समाज में नारी की स्थिति में भी परिवर्तन आया। देश विभाजन के समय होने वाले उथल–पुथल से सबसे अधिक अत्याचार नारी पर हुए। स्वातंत्र्योत्तर समाज में नारी ने निश्चय कर लिया कि वह अब पुरुष प्रधान समाज में अपनी उपेक्षित स्थिति को सुधारेगी। सरकार ने नारी के इन विचारों का स्वागत किया और उसे कानूनन बराबरी का हक दिया गया। नारी शिक्षा की ओर जागरूक हुई और उसमें आत्मसम्मान की भावना का विकास हुआ। अब बाहरी तौर पर आधुनिकरण का जामा ओड़कर भी वह भीतर से परम्परागत संस्कारों से ही जकड़ी रही।

स्वातंत्र्योत्तर नारी केवल पुरुष के प्रति समर्पित परम्परागत नारी नहीं रह गई अपितु यह स्वाभिमानी नैतिक उत्तरदायित्वों एवं सामाजिक कर्त्तव्यों से सधी हुई नारी बन गई है। जीवन की सामान्य जरूरतें व चिंताएं उसके लिए गौण हो गई। नारी द्वारा सदियों से भोगी जा रही परवशता के प्रति अब उसके नकार का दृष्टिकोण पनपने लगा। वह अपने व्यक्तित्व की स्थापना के लिए प्रयत्नशील हो उठी। स्वतंत्रता के पश्चात् भी नारी व्यक्तित्व स्वातंत्र्य के लिए संघर्ष के लम्बे पथ से गुजरी है। उसका मार्ग सुगम नहीं था, अपितु उसने व्यक्तित्व की स्वतंत्रता के पथ में समाज की परम्परागत अवधारणाएं अवरोध के रूप में जन–जन उपस्थित हो जाती तो भी अपने व्यक्तित्व की पहचान के लिए उसका संघर्ष, उसका उत्साह कम नहीं कर पाया। वह पूर्व उत्साह व साहस के साथ विषम परिस्थितियों में अपने व्यक्तित्व की स्थापना के लिए प्रयत्नशील रही है।

ग्रामीण समाज में नारी की दयनीय स्थिति और बदलते जीवन मूल्यों के तहत नारी में चेतना का विकास किन–किन परिस्थितियों के अनुरूप हुआ, इसका यथार्थ वर्णन रेणु के कथा साहित्य में देखने को मिलता है।

'मैला आँचल' उपन्यास में नारी की दयनीय स्थिति तथा नवीन चेतना के आलोक में नारी के उभरते एवं बदलते दृष्टिकोण का रेणु ने यथार्थ वर्णन किया है। इस उपन्यास की पात्र लक्ष्मी दासिन की दयनीय स्थिति का यथार्थ चित्रण हुआ है। अबोध लछमी को पिता की मृत्यु के बाद दासी बनाकर भोग्या बनाया जाता है। महत सेवादास उसे अपनी वासना का शिकार बनाता है और उसकी अनुपस्थिति में रामदास भी उसके साथ बलात्कार करता है।

एक प्रत्यक्षदर्शी पात्र के शब्दों में, "कहा वह बच्ची और कहाँ पचास बरस का बूढ़ा गिद्ध। रोज रात में लछमी रोती थी–ऐसा – रोना कि जिसे सुनकर पत्थर भी पिघल जाये।....सुबह में रोने का कारण पूछने

पर चुपचाप टुकुर–टुकुर मुँह देखने लगती थी–ठीक गाय की बाछी की तरह, जिसकी माँ मर गयी हो। इससे उसकी यातना पूर्ण स्थिति स्पष्ट होती है।

नारी जीवन की विडम्बना का यथार्थ रूप मंगला देवी की मन स्थिति के माध्यम से स्पष्ट हो जाता है। उसके वैचारिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए लेखक ने लिखा है, ष्मंगलादेवी ने दुनिया को अच्छी तरह पहचाना है। आदमी के अन्दर के पशु को उसने बहुत बार करीब से देखा है। विधवा–आश्रम, अबला–आश्रम और ––– बड़े बाबुओं के घर आया की जिंदगी उसने बिताई है। अबला नारी हर जगहअबला ही है। रूप और जवानी? नहीं, यह भी गलत। औरत होनी चाहिए, रूप और उम्र की कोई कैद नहीं। एक असहाय और देवता के संरक्षण में भी सुख–चौन से नहीं सो सकती। उसके लिए जैसा पर पैसा बाहर। उसका कौन है अपना? कोई नहीं। इसी तरह लड़कियों के बारे में ग्रामांचल के लोगों की धारण है कि, लड़की की जात बिना दवा दारू के ही आराम हो जाता है। उनकी परवाह नहीं की जाती है। नारी को केवल मनोरजन का साधन समझा जाता है। माँ–बाप स्थिति को जानते हुए भी अनजान बने रहते है।

परती परिकथा उपन्यास में भी नारी की स्थिति का समाज में बेहतर रूप देखने को नहीं मिलता। इस उपन्यास की इरावती के वक्तव्य के माध्यम से नारी जीवन की दयनीय स्थिति का रूप स्पष्ट हो जाता है। इरावती नेता भैया के प्यार के विषय में प्रश्न करने पर उसके प्रत्युत्तर में कहती है. असल में प्यार करने की ताकत मुझमें नहीं। दिन–रात इसी चेष्टा में रहती हूँ कि मेरा प्यार फिर पनपे। किन्तु कहां जन्म लेता है मेरे उजाड मन में कुछ। नेता भैया लजाते क्यों हो? तुमने कोई अपर्म नहीं किया है। हजारों औरतों पर बलात्कार होते देखा है मैंने, दिन–दिहाडे सड़को पर। दर्जनों बार बलात्कार की पीड़ा से छटपटायी हूँ, चीखती रही हूँ गला फाड़कर। मैंने उस समय की चीखें सुनी है जबकि लोहे के लाल गर्म सलाखों से... द्य सड़े हुए सन्तरों की तरह सड़को पर कटी हुई छातियों को लुक्कते देखा है। मुझे लगता है मेरी छाती पर भी दो कटे हुए स्तन रखे हुए है जान मांस के टुकड़े इतना सब कुछ देखने और सहने के बाद किसी औरत का दिल–दिमाग प्यार करने के काबिल कैसे रह सकता है? मैं कल्पना भी नहीं कर सकती कि इन्सान काल और बलात्कार करने के सिवा और कुछ कर सकता है। नारी जीवन की दयनीय स्थिति के पीछे आर्थिक स्थिति भी एक कारण रही है। नहिन जाति की स्त्रियां मेले में तम्बू लेकर जाती है और आजीविका के लिए सब कुछ करती है।

उपसंहार

फणीश्वरनाथ रेणु ने साहित्य में नारी जीवन की दयनीय स्थिति का ही वर्णन नहीं किया है, परन्तु बदलते परिवेश के साथ नारी जीवन की स्थिति में हुए परिवर्तन का भी यथार्थ चित्रण किया है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार केफलस्वरूप आज की नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है। परम्परागत मान्यताएँ एवं नैतिक आदर्श अब उसके लिए उतने महत्वपूर्ण नहीं रह गये है। परिवर्तित सन्दर्भो में वह नवीन मानसिकता से आंदोलित है। नवीन विचारों एवं आदर्शों के आलोक में उसकी परम्परागत हीन भावनाएँ विलुप्त होती जा रही है। यद्यपि ग्रामीण समाज में अभी शिक्षा का पर्याप्त प्रचार–प्रसार नहीं हो पाया है तथापि ग्रामीण नारी भी किसी न किसी रूप में इस नवीन मानसिकता से अवश्य प्रभावित है।

संदर्भ सूचि :

[1] गणदेवता,(2018) रचनावली–ताराशंकर बन्योपाध्याय, मित्र एण्ड घोष पब्लिसर्श प्रा0 लिए कलकत्ता, प्रथम संस्करण–बैशाख 1380, पृ0–22

[2] रेणु (2016) मैला आंचल, रेणु रचनावली, भारत यायावर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016 पृ0–11

[3] शुभ्रा परमार(2019) नारीवादी सिद्धांत और व्यवहार, ,ओरियंट ब्लैक स्वान, 2019 प्रथम संस्करण, पृ०–30

[4] चण्डी प्रसाद जोशी,(2020) हिन्दी उपन्यास का समाजशास्त्रीय विवेचन रू (अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर,)।

[5] त्रिभुवन सिंह,(2017) साहित्यिक निबन्ध रू हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी,

[6] त्रिभुवन सिंह, (2018)हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद रू हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, पृ0 02–20.

[7] त्रिलोक चन्द तुलसी,(2017) परिवेश, मन और साहित्य रू प्रतिभा प्रकाशन, होशियारपुर, पंजाब, पृ0 5–12.

[8] देवेश ठाकुर, (2016)मैला आँचल की रचना प्रक्रिया रू वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, पृ0 11–22.

[9] देवेन्द्र इस्सर, (2018)साहित्य और आधुनिक युगबोध रू जय कृष्ण अग्रवाल, कृष्ण ब्रदर्ज अजमेर, पृ0 4–50.

[10] नगीना जैन, (2019)आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास रू अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 12–62.

[11] नामवर सिंह, (2018)आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां रू किताब महल इलाहाबाद, पृ0–30.

[12] कबीर आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पटना, 2018, पृ0– 127.

[13] लाव्णयदेवी, कुसुम खेमानी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली. प्रथम संस्करण–2015. पृ0–195.

[14] रामायण और मानस के नारी पात्र में वैषम्य, पृ०–196.

[15] मधुरेश, (2019)हिंदी उपन्यास का विकास, इलाहाबाद, सुमित प्रकाशन च.140–143.